"ॐ नमो भगवते साईंनाथाय"

ॐ श्री साईं गणेशाय नमः।। साईं अनन्ते साईं भगवन्ते।। साईं रामाये साईं शिवाये।। साईं दयाले साईं कृपाले।। साईं अखण्डे साईं प्रचण्डे।। साईं सुजाने साईं भगवाने।। साईंनाथाये पतित पावनाये।। साईं कृष्णाये साईं केशवाये।। साईं माधवाये सर्व आत्माये।।

साईं मंगलाये भक्त वत्सलाये।। साईं राघवाये दातात्राये।। ॐ नमो श्री साईं समर्थ।।१ ।। सदा सदा साईं भजो छोड़ो सभी विकार।। सुख को मार्ग एक है साईं चरण में प्यार।। ॐ जगद्गुरु साईंनाथाय नमः।।२।। नमो नमो श्री साईं सुजाना।। नमो नमो समर्थ भगवाना।। नमो नमो जग पावन साईं।। नमो नमो कृपाल गुसाईं।। नमो नमो सन्तन प्रतिपाला।। नमो

नमो श्री साईं दयाला।। नमो नमो साईं अविनाशी।। नमो नमो घट घट के वासी।। नमो नमो श्री आतम् रामा।। नमो नमो प्रभु पूरन कामा।। नमो नमो भक्तन् सुख दाता।। नमो नमो श्री साईं विधाता।। ॐ साईं दूख निवारणाय नमः।।३।। साईं भजन को चोला पाया मूरख क्यों भरमाए।। साईं अपने भक्तों की बिगड़ी आप बनाए।।४।। ॐ साईं शिव

शक्तियै नमः।। धन्य धन्य श्री साईं प्यारे।। धन्य धन्य प्रभु पालनहारे।। धन्य धन्य मेरे साईं दाता।। धन्य धन्य सब के पितु माता।। धन्य धन्य श्री साईं उजागर।। धन्य धन्य करुणा के सागर।। धन्य धन्य श्री साईं हमारे।। धन्य धन्य भक्तन् रखवारे।। धन्य धन्य सब जग के स्वामी।। धन्य धन्य श्री साईं नमामी।। ॐ साईं दीनबन्धुआय नमः।।५।। मुख में साईं नाम हो

पूरन हो विश्वास।। ये जीवन सुखमय हो यम की रहे न त्रास।।६।। ॐ देवगुरु साईंनाथाय नमः।। प्रार्थना।। शरण में आए हैं बाल तेरे हमें उभारो दयालु साईं।। तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो तुम्ही हो बन्धु सखा गोसाईं।। तुम्ही हो भगवन् हमारे देवा बसो हमारे मनों के माँहीं।। हमें दो भक्ति हमें दो मस्ती तुम्हें ही पूजें हे बाबा साईं।। हे सर्व आतम् हे परम् आतम् तुम्ही रमे

हो जगत् के माँहीं।। तुम्हारे बालक सदा पुकारें साईं बिना है कछु भी नाहीं।। ॐ साईं भक्त रक्षकाय नमः।।७।। साची भक्ति साईं की कामधेनु ले जान।। भक्तों की पत राखते साईंनाथ सुजान।। ८॥ ॐ साईं सर्वशक्तिमानाय नमः।। सदा सदा साईं पिता मन में करो निवास।। सच्चे हृदय से करूँ तुम से ये अरदास।। कारण कर्ता आप हो सब कुछ

तुमरी दात।। साईं भरोसे मैं रहूँ तुम ही हो पितु
मात।। विषयों में मैं लीन हूँ पापों का नहीं
अन्त।। फिर भी तेरा तेरा हूँ राख लेयो
भगवन्त।। राख लेयो हे राखनहारे साईं गरीब
निवाज।। तुझ बिन तेरे बाल के कौन संवारे
काज।। दया करो दया करो दया करो मेरे
साईं।। तुझ बिन मेरा कौन है बाबा इस जग
मांहीं।। मैं तो कुछ भी हूँ नहीं सब कुछ तुम हो

नाथ।। बच्चे के सर्वस्व प्रभु तुम सदा रहो मेरे साथ।। ॐ साईं भगत् भयहारियाय नमः।।९।। साईंनाथ दयाल की महिमा अपरम्पार।। जो जन साईं शरण में आएँ उतरें भव से पार।।१०।। ॐ साईं सर्व साक्षीयाय नमः।। साईं सर्व समर्थ स्वामी साईंनाथ सुजाना।। पतितों को जो पार लगावें सो साईं भगवाना।। आदि गुरु हैं बाबा मेरे करें सकल कल्याना।। साईं शंकर साईं

विष्णु साईं ब्रह्म समाना।। बाबा ने यह सार बताया अपना आप मिटाना।। जीवन का आनन्द यही है जीते जी मर जाना।। राम श्याम और साईंबाबा तीनों एकै जाना।। तिन की किर्पा पाई जा ने अपना आप पिछाना।। ॐ साईं परिपूरनाय नमः।।११।। निर्धन के धन निर्बल के बल साईं दीनदयाल।। जो जन अपना आप गंवाएं ता पर होएँ कृपाल।।१२।। ॐ

साईं रामाय नमः।। त्रेता राम कहाये जो द्वापर बने गोपाल।। सो हमरी रक्षा करें श्री साईंनाथ कृपाल।। दीनानाथ दयानिधे भक्तों के प्रतिपाल।। हमरे हृदय सो बसें श्री समर्थ साईं दयाल।। हैं अनाथ के नाथ जो जग के पालनहार।। हमरे हैं वो अपने श्री बाबा अपरम्पार।। अन्तरयामी अजर अमर अशरन शरन भगवान।। हमरे रखवारे वही श्री समर्थ

साईं सुजान।। सुर नर मुनि जा को भजें पार न पावे को।। मेरे तो प्रभु हैं वही श्री साईं कहावें जो।। ॐ साईं कर्मफलदाताय नमः।।१३।। भक्ति साईंनाथ की सभी संवारै काज।। भक्तों के हैं एक सहारे साईं गरीब निवाज।।१४।। ॐ साईं आदि शक्तियै नमः।। भीतर बाहर साईं निहारो शरण साईं की लीजो।। कर्ता धर्ता साईं जानो साईं चरण चित्त दीजो।। साईं के

गुण गाओ निरन्तर रसना अमृत पीजो।। साईं दाता साईं विधाता निशदिन वन्दन कीजो।। साईं लीला सुनो सुनाओ बीज प्रेम का बीजो।। हृदय भीतर बसत हैं साईं पल पल पूजन कीजो।। सब देवों के देव हैं साईं सदा चरण रज लीजो।। हैं हमरे पितु मात गोसाईं प्रेम भक्ति वर दीजो।। ॐ साईं पतित पावनाय नमः।।१५।। राखनहारा साईं है दूजा नाहीं

कोय।। मानव चोला पाय के सिमरो सद् ही
सोय।।१६।। ॐ साईं सर्वव्यापकाय नमः।।
बाबा मेरे अलख अविनाशी बाबा मेरे अनन्त।।
देवी देव ध्यावें बाबा भजें साध और सन्त।।
बाबा की है महिमा न्यारी कोय न जाने अन्त।।
बेशुमार अथाह हैं बाबा आदि पुरुष भगवन्त।।
जो जन सदा अराधें बाबा सो जानो धनवन्त।।
बाबा के जो शरणागत् हों सो ही सूर बलवन्त।।

बाबा के यह रूप हैं सारे सभी जीव और जन्त।।
सब के भीतर देख रे मनुवा सर्वकला भगवन्त।।
ॐ साईं विपत्ति भंजनाय नमः।।१७।। साईं माँ
के भजन को सब से दुर्लभ जान।। चरण कमल
हृदय धरो सदा करो गुणगान।।१८।। ॐ साईं
दात्रात्राय नमः।। साईं भज साईं भज साईं भज
बाँवरे।। देख तुझे तारने को आये हैं दत्तात्रय।।
साईं भजने को आया भज दिन रात रे।। कठिन

से पायो है ये अवसर बीतो जात रे।। दाता को बिसार अपनाई तू ने दात रे।। साईं अपना भूल गयो कैसी है ये बात रे।। घट घट साईं बैठे ब्रह्म साक्षात् रे।। तार सब हाथ लिये जग को घुमात रे।। साईं शरण लाग वही बिगड़ी बनात रे।। आयो जग तारने को वही पितु मात रे।। ॐ साईं शान्तिदाताय नमः।।१९।। झूठे जग को छोड़ के जो साईं अपनाए।। साईं का ही हो रहे सूख

शान्ति पाए।।२०।। अमंगलहरण स्तोत्रम्।। नमो जगगुरम् ईश्वरम् साईंनाथम्।। पुरुषोतमम् सर्वलोकम् प्रकाशम्।। चिदानन्दरूपम् नमो विश्वआतम्।। योगीश्वरम् करुणाकर साईंनाथम् ।। २१ ।। ॐ साईं सर्व अंतरयामियाय नमः।। हे मेरे साईं पिता बालक की विनती सुन जरा।। कैसे बताऊँ तुझ से मैं मेरा फ़साना दुख भरा।। मोड़कर दुनिया से मुँह

तुझ को ही पाना चाहूँ मैं।। अपने पिता की गोद में फिर से ही आना चाहूँ मैं।। मगर ये तुमरी माया मुझ को सदा भटकाये है।। तेरे इस बच्चे को माया देख लो अब खाये है।। माया के इस तूफान में बालक ये डूबा जाये है।। मन में लहरें उठ रहीं बुद्धि मेरी भरमाये है। थाम लो साईं पिता बच्चे को अब तुम थाम लो।। तुम तो कभी छोड़े नहीं शरण में तुमरी आए जो।। मुझ

को इक तेरा भरोसा एक तेरी आस है।। रक्षा करो रक्षा करो ये ही मेरी अरदास है।। ॐ साईं अपराधहर्ताय नमः।।२२।। ऋद्धि सिद्धि छोड़ के जो अपनाएँ साईं।। ता का हृदय शुद्ध हो साईं बसें घट मांहीं।।२३।। ॐ साईं त्रिलोकीनाथाय नमः।। अपने बालक से मेरे बाबा कब तक छुपे रहोगे तुम।। कब वो मंगल दिन आयेगा जब मोहे आन मिलोगे तुम।। पल पल मेरी रक्षा

करते छुप कर रहते संग मेरे।। दया तुम्हारी देख देख मन सदा करे गुणगान तेरे।। दया तुम्हारी अनुभव करके मुग्ध हुआ जाता हूँ मैं।। परम् पिता को मिलने को बेताब हुआ जाता हूँ मैं।। मुझे बताओ मेरे बाबा कैसे तुझ को पाऊँ मैं।। मेरे सब कुछ तुम ही तुम हो तुझ बिन कछु न चाहूँ मैं।। रो रो तेरा बाल पुकारे मेरे बाबा आ जाओ।। माया ने मोहे फाँस लिया है जल्दी आन

छुड़ा जाओ।। ॐ साईं अमंगलहारी देवाय नमः।।२४।। भक्ति साईंनाथ की सर्व सुखों की खान।। साईं सिमरन भजन से सब का हो कल्यान।।२५।। ॐ साईं महादुर्गायै नमः।। साईं सर्व आतम् पिता मुझ को दो वरदान।। पल पल करता ही रहूँ मंगलकारी ध्यान।। तुझ बिन यूँ तड़पत रहूँ ज्यों जल के बिन मीन।। प्यारे साईं रूप में रहूँ रात दिन लीन।। अपनी कृपा से करो

दुर्बुद्धि का नाश।। भीतर में देखत रहूँ तुमरा ही परकाश।। आतम् दृष्टि दो मुझे हे साईं भगवन्त।। घट घट में पूजत रहूँ आतम् साईं अनन्त।। ॐ साईं दीनबन्धुआय नमः।।२६।। नाम सहारे जो रहे ता की हो न हान।। जा घट साईं नाम है ता घट श्री भगवान।।२७।। ॐ साईं शंकराय नमः।। अब तो जान लियो है मैं ने साईं मेरे रखवारे हैं।। साईं खिलायें साईं

पिलायें वो ही पालनहारे हैं।। अंग संग हैं रहते हरदम करन करावनहारे हैं।। साईं मेरे सर्वस्व स्वामी मुझ को सब से प्यारे हैं।। सब आशा अब छोड़ के हम तो पड़े साईं के द्वारे हैं।। साईं शरण हम साईं हवाले वो ही तारनहारे हैं।। पतितों को वो पार लगावें उन के खेल न्यारे हैं।। भक्तों के बस एक सहारे साईं अपरम्पारे हैं।। ॐ साईं सुख स्वरूपाय नमः।।२८।। मानव का चोला मिला

विषयन मांहिं गंवाएँ।। जो भूलत हैं साईं को फिर चौरासी जाएँ।।२९।। ॐ साईं अकाल पुरुषाय नमः।। बाबा को भूल कर फिर जीवन का क्या मज़ा है।। रहना है हम को ऐसे जिस में साईं रज़ा है।। बाबा के हम हैं बालक बाबा के आसरे हैं।। हम हैं तो साईं के हैं जो भी भले बुरे हैं।। रहते साईं भरोसे चिन्ता काहे करें हम।। बाबा की चरण रज को सिर पर सदा धरें हम।।

हम उनके वो हमारे हमरा न और कोई।। बाबा के प्यार में अब सुध हम ने अपनी खोई।। ॐ साईं कृपासागराय नमः।।३०।। छोड़ो जग की आशा तृष्णा भक्ति करो निष्काम।। साईंनाथ दयाल हों पूरन हों सब काम।।३१।। ॐ साईं कर्तापुरुषाय नमः।। साईं दया ही जग में सब कुछ करा रही है।। बाबा को भूल दुनिया मुश्किल उठा रही है।। जिस ने जो कुछ है पाया

साईं दया से पाया।। साईं बिना ना जग में कोई भी काम आया।। साईं दया न हो तो कुछ भी न हाथ आये।। साईं दया ही पल पल बिगड़ी को है बनाये।। साईं दया से मानुष पाता है अपना साईं।। तज के स्वपन जगत् को रहता है घट के मांहीं।। थोड़े में जान लो अब साईं दया है सब कुछ।। साईं करत हैं पूरन साधन करम् हैं सब तुच्छ।। ॐ साईं आनन्द मूरताय

नमः।।३२।। जो प्राणी माया तजे साईं शरण में आए।। सुखी रहे वो जगत् में अन्त परम् पद पाए।।३३।। ॐ साईं आदि नारायणाय नमः।। काहे नहीं बोलत घड़ी घड़ी।। साईं नारायण हरी साईं नारायण हरी।। साईं नारायण हरी साईं नारायण हरी।। गौतम नारी जा की रज ले इस भव सागर से पार तरी।। गणिका गज को तारा जा ने पल पल भक्तन्

की पीड़ हरी।। मीरा ने सचमुच विष पी ली हृदय में मोहन रूप धरी।। वो शिरडी प्रगटे नारायण मस्जिद में आकर बास करी।। सब मिलकर यह आवाज़ करो रिक्कत से भरी करुणा से भरी।। साईं नारायण हरी साईं नारायण हरी।। साईं नारायण हरी साईं नारायण हरी।। ॐ साईं चिन्तानाशकाय नमः।।३४।। माया के हित कारने मूरख जनम् गँवाए।। साची भक्ति साईं

की विरला कोई पाए।।३५।। ॐ साईं देव रक्षकाय नमः।। जब जब भीड़ पड़ी भगतन् पर तब तब भगवन् नरदेही धरे।। मेरो मन दिन रात पुकार करे जै साईं हरे जै साईं हरे।। त्रेता में राम चरन रज ले कोटि जन भव से तार परे।। इस युग में साईंनाथ प्रभु पतितों का सदा उद्धार करे।। द्वापर में श्याम मुरलिया ले भक्तों के हृदय प्रेम भरे।। कलयुग में सोयम् साईं पिता

बच्चों के कारज रास करे।। हे परमेश्वर श्री साईं प्रभु तुझ से नहीं दूजा और परे।। जो साईं भजें अमृत पीते जो भूलें सो बेमौत मरे।। ॐ साईं भाग्यविधाताय नमः।।३६।। नाम के अभ्यास से सभी अमंगल जाएँ।। स्वासों स्वासा सिमरते जीव शान्ति पाएँ।।३७।। ॐ साईं त्रैकालदर्शीयाय नमः।। मेरे बाबा तू ही तू मेरे बाबा तू ही तू।। पितु मात है तू सुत भ्रात है

तू।। हर दात में तू हर बात में तू।। मेरे बाबा
तू ही तू मेरे बाबा तू ही तू।। हर हाल में तू
प्रतिपाल है तू।। है दीनानाथ दयाल है तू।। मेरे
बाबा तू ही तू मेरे बाबा तू ही तू।। हर जीव में
तू हर चीज़ में तू।। हरी भक्तों का तो पीव है
तू।। मेरे बाबा तू ही तू मेरे बाबा तू ही तू।।
हर काम में तू हर धाम में तू।। सन्तों का सहारा
राम है तू।। मेरे बाबा तू ही तू मेरे बाबा तू ही

तू।। हरी नाम में तू निष्काम में तू।। भक्तों का प्यारा श्याम है तू।। मेरे बाबा तू ही तू मेरे बाबा तू ही तू।। ॐ साईं करुणासिन्धुआय नमः।।३८।। निन्दा नाहीं कीजियो निन्दा बड़ो है पाप।। सदा ही निन्दक जीव को व्यापें तीनों ताप।।३९।। ॐ साईं सच्चिदानन्द स्वरूपाय नमः।। आठों पहर साईं अन्दर से देखते हैं।। तू जग का है या उन का यह सद ही पेखते हैं।।

वो हैं दया के सागर मंगल के धाम हैं वो।। जो कुछ है जान पड़ता जानो तमाम हैं वो।। उन से नहीं अलग तू यह जान ले रे भाई।। जितनी भी है यह रचना उन में है सब समाई।। हर घट में आप बसकर सब कुछ करा रहे हैं।। यह लेख जो तू लिखता वो ही लिखा रहे हैं।। ॐ साईं कल्याणस्वरूपाय नमः।।४०।। वडभागी सो जीव हैं साईं शरण जो आएँ।। साईं इच्छया में

रहें अन्त परम् पद पाएँ।।४१।। आरती।। गद् गद् हृदय से आरती उतारें साईं प्रेम की घट में जलायें बाती।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती।। साईं पूरन पुरुष विधाता साईं भक्तों के पितु माता।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती।। साईं तेरी लीला न्यारी तेरे चरणों पे बलिहारी।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती।। साईं हम हैं तेरे बन्दे तेरी

पूजा में हैं रंगे।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती।। साईं हम हैं तेरे बालक तू है हमरा सब का पालक।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती।। साईं सच्ची भक्ति दीजो हम को अपना ही कर लीजो।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती।। साईं ब्रह्म का भेद बताओ हम को माया से छुड़ाओ।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती।।

साईं देह का भाव मिटाओ अन्तर आतम् में ले जाओ।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती।। साईं अपना आप मिटायें हम सब तुझ में ही मिल जायें।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती।। साईं बसो मन के मांहीं अन्दर साईं बाहर साईं।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती।। साईं तुझ बिन कोऊ नाहीं मेरो साईं साईं साईं।। साईंनाथ तेरी

आरती हे दयाल तेरी आरती।। साईं तेरा तेरा तेरा मैं हूँ तेरा तेरा तेरा।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती।। गद् गद् हृदय से आरती उतारें साईं प्रेम की घट में जलायें बाती।। साईंनाथ तेरी आरती हे दयाल तेरी आरती हे कृपाल तेरी आरती।। बाबा मेरे राम हैं बाबा घनश्याम हैं बाबा पे मैं जाऊँ वारी कोटि पर्नाम हैं।। बाबा भगवान हैं राम के समान हैं बाबा

निज भक्तों को देते सम्मान हैं।। बाबा मेरे प्राण हैं अति दयावान हैं बाबा के गुण गायें हम बाबा पे कुरबान हैं।। बाबा ही सुजान हैं सब से महान हैं बालकों के मात पिता करुणानिधान हैं।। सदा सदा हम करें आरती साईं दीनदयाल की।। क्षमासिन्धु दया के सागर साईंनाथ कृपाल की।।४२।। प्रार्थना।। साईंनाथ दयाल ने किर्पा कीन अपार।। पावन साईं नाम दियो

एक साईं आधार।। साईं माँ के नाम की महिमा अपरम्पार।। मैय्या तेरे रूप पर जाएँ सद् बलिहार।। साईं तेरे नाम में सदा रहें हम लीन।। तेरे इस जग में प्रभु रहें साईं आधीन।। हम तो हैं बालक सभी मैय्या साईंनाथ।। मैय्या तुझ को पाय के हम हैं भये सनाथ।। साईं तुझ से बिछड़ के पड़े काल के फन्द।। मैय्या अब ना बिछड़ना काट देयो सब बन्ध।। हम तो कुछ भी हैं नहीं

जो कुछ भी हो आप।। अन्तरयामी रूप से घट घट रह्यो व्याप।। जै जै साईंनाथ की जै प्रभु पूरन काम।। परम् दया से हे साईं भक्ति देयो निष्काम।। हे माँ! दया कृपा क्षमा।। हे माँ! दया कृपा क्षमा।। हे माँ! दया कृपा क्षमा।।४३।।

"अंत में श्री साईं महिमा का सार"

हर कार्य में तू हर कार्य है तू कारण भी तू

कर्ता भी तू।। है राग भी तू रागी भी तू है कवि भी तू कविता भी तू।।४४।।

"ॐ श्री साईं"